2018 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर

मु. उ. पु. 20 पृष्ठ

परीक्षार्थी हेतु

प्रश्न पत्र सेट A, B, C लिखें: A

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल सर्टि.परीक्षा

1. विषय कोड 0 0 1 विषय हिन्दी

निर्देश पृष्ठ 02 पर देखें

2. दिनांक 08-03-18 3. माध्यम हिन्दी 4. कक्ष क्रमांक 10

5. संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका की संख्या शब्दों में: दो अंकों में: 02

...क्षा केन्द्र क्र. ... उ. पु. सरल क्र.

...मांक (अंकों में): 1 1 8 7 2 0 0 3 2 3

...मांक (शब्दों में): एक एक आठ सात दो शून्य शून्य तीन दो तीन

राजेश

परीक्षार्थी हस्ताक्षर

...णीकरण

...का अनुक्रमांक, पूरक उ. पु. की संख्या, प्रश्नपत्र सेट कोड, माध्यम विषय कोड की जांच की गयी, सही है।

पर्यवेक्षक हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

... पद A.T. संस्था G.H.A.H.S.S. JASHPUR

प्रश्न क्रमांक	प्राप्तांक	प्रश्न क्रमांक	प्राप्तांक	प्रश्न क्रमांक	प्राप्तांक
1	15	11	4	21	
2	2	12	4	22	
3	2	13	3	23	
4	2	14	4	24	
5	2	15	3	25	
6	2	16	5	26	
7	3	17	5	27	
8	2	18	8	28	
9	3	19		29	
10	3	20		30	

[कुल प्राप्तांक को लाल स्याही से गोल घेरा करें।]

00	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
	71	(72)	73	74	75	76	77	78	79	80
	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

कुल प्राप्तांक अंकों में 0 7 2 शब्दों में 0 सात दो

हस्ताक्षर परीक्षक

परीक्षक क्रमांक 14010317

72/75

हस्ताक्षर उपमुख्य परीक्षक

क्रमांक E/H/5 11010983

हस्ताक्षर मुख्य परीक्षक

क्रमांक

E/H/015

2018 (3)

10 10

10	=	10
पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

प्रश्न क्रमांक- 01
(खण्ड - अ)

उत्तरः- (i) (ब) रचना।

(ii) (ख) ओस।

(iii) (स) सीढ़ीदार है।

(iv) (ब) तीन।

(v) (अ) हरिजन।

प्रश्न क्रमांक- 02
(खण्ड - ब)

उत्तरः- (i) बरठै

(ii) सुख एवं दुःख रूपी

(iii) अमृत

(iv) झाँसी की रानी

(v) लघुकथा

CGBSE
www.studydiscuss.in

2018 (4)

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक
10	+	5	=	15

C G B S E

प्रश्न क्रमांक - 01
(खण्ड - स)

उत्तर :-

(क)	उत्तर
(i) मधुलिका	- सिंहमित्र की कन्या।
(ii) कन्यादान	- प्रथा व ऋतुराज।
(iii) वाल्मीकि आश्रम	- तुरतुरिया।
(iv) स्टालिन	- अधिनायक।
(v) मरिया	- प्रथा।

WWW.STUDYDISCUSS.IN

15 +3 18

2018 (5) | 15 | + | 3 | = | 18 |

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 4 के अंक   कुल अंक

प्रश्न क्रमांक -02

उत्तर:- बगुला समाज में लोभी वर्ग का प्रतीक है। इसकी विशेषता है कि यह तालाब में पैर डुबाए, ध्यानमग्न हो कर संत के समान ध्यान लगाए खड़ा रहता है परन्तु मछली पर दृष्टि पड़ते ही वह अपने पाखंडी रूप में आजाता है और त्वरित मीन को अपने कण्ठ में डाल देता है।

यह संत के रूप में होने के बाद भी अपने लालच की पूर्ति करता है।

2

C G B S E

प्रश्न क्रमांक -03

उत्तर:-

मजदूर वर्ग जीवन श्रम शक्ति के इकाई होते हैं। विश्व के असभ्यतापूर्ण जनता को सभ्य बनाने, और उन्हें नई-नई सुविधाएँ उपलब्ध कराने का श्रेय उन्हीं मेहनतकश मजदूरों को जाता है।

2

I

www.studyrule.com

2018 (6) 18 + 3 = 21

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

उन्होंने अपने श्रम के दम पर विश्व को उन्नति के सोपानों पर चढ़ाया है

इस कारण उन्हें जीवनबद्ध श्रम शक्ति की इकाई कहा गया है

प्रश्न क्रमांक - 04

उत्तरः- माटीवाली का कनस्तर टिन का गोल डिब्बा था जो रद्दी वस्तों से बने डिब्बे पर टिका होता था। माटीवाली का कनस्टर लाल मिट्टी से लबालब भरा होता था। कनस्तर मे ढक्कन नहीं होता था ताकि उसमे से मिट्टी आसानी से निकाला जा सके।

प्रश्न क्रमांक - 05

(P.T.O)

CGBSE
CGBSE
www.studydiscuss.in

2018 (7) 21 + 4 = 25

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 05

उत्तर:- जब जनरल स्मिथ ने सोनाखान पर आक्रमण करने हेतु सोनाखान की ओर कूच किया तब वीर नारायण सिंह की सेना ने उन पर हमला बोल दिया। पर ठीक समय पर स्मिथ को सैन्य ताकतें मिल गई, जिससे वह निरंतर सोनाखान में प्रवेश हेतु आगे बढ़ने लगा। वीर नारायण सिंह की सेना उन्हें रोकने में असमर्थ हो गई और वे जंगल की ओर चले गए।

2

प्रश्न क्रमांक - 06

उत्तर:-

सगुण भक्ति शाखा के दो कवि व उनकी रचनाएँ:-

कवि	रचनाएँ
(i) सूरदास	सूरसागर, सूरसारावली
(ii) तुलसीदास	रामचरित मानस, विनय पत्रिका.

2

CGBSE
www.studyfocus.in

2018 (8) 25 + 3 = 28

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

CGBSE

प्रश्न क्रमांक - 07

उत्तर:-

बाँध, सड़क आदि सरकारी कार्य होने पर स्थानीय लोगों को कौन निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ता है:-

(1) विस्थापन की समस्या प्रमुख है। लोग अपनी ~~निजि~~ निजी जमीन को छोड़कर अन्यत्र जाने को बाध्य हो जाते हैं।

(2) रोजगार के भी साधन प्रभावित होते हैं। विस्थापन से रोजगार भी प्रभावित होता है।

(3) प्रमुखरुप से प्रदूषण आमजन को प्रभावित करता था। वायु प्रदूषण उनमें मुख्य है।

(4) स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है।

www.studydiscuss.in

2018 (9) 28 + 2 = 30

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 8

उत्तर:- 'सुआ' नृत्य में टोकनी के ऊपर सुआ रखा जाता है तथा महिलाएँ इसके चारों ओर वृत्ताकार रूप में व्यवस्थित होकर नृत्य करती हैं।

'सुवा' रखने का अर्थ है कि छत्तीसगढ़ में 'सुवा' को आत्मा का प्रतीक माना जाता है। कहीं-कहीं इन्हें शिव-पार्वती का भी स्वरूप मान महिलाएँ अपने दुःख का वर्णन करती हैं। यह कबीर के हंसा की भाँति है।

2

प्रश्न क्रमांक - 09

उत्तर:-

'भाइ रे! ऐसा पंथ हमारा पंथ' कविता के माध्यम से संत दादू दयाल अपने पंथ की विशेषताओं का उल्लेख कर रहे हैं। अर्थात् दादू जी कहते हैं कि हमारा पंथ के दो पक्ष नहीं हैं। यह अद्वैत

CGBSE
www.studydiscuss.in

2018 (10) 30 + 4 = 34

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

ही निराला है। इसमें ~~सांसा~~ सांसारिक माया-मोह से मुक्ति प्राप्त करने का सबसे सहज मार्ग को बताया गया है। इसमें सभी को समदृष्टि से देखा जाता है।

इस पंथ में मैं-तैं की भावना नहीं है। यह ईश्वर की प्राप्ति का अत्यंत ही सहज मार्ग है।

प्रश्न क्रमांक - 10

उत्तर:-

छायावाद:-

"स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है।"

छायावाद में कल्पना प्रधान रचना की जाती है। इसमें सूक्ष्मता को विशेष महत्व ~~प्रदीन~~ प्रदान किया गया है।

(P.T.O.)

CGBSE
CGBSE
www.studydiscuss.in

2018 (11) 34 + 2 = 36

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

छायावाद की दो विशेषताएँ:-

1. प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया जाता है।

2. मानवीकरण अलंकार के प्रयोग से काव्य की शोभा में श्रीवृद्धि हुई है।

[प्रश्न क्रमांक - 11]

उत्तर:-

'नर्मदा का उद्गम : अमरकंटक' पाठ में नर्मदा तथा शोण (सोन) के उद्गम का सौंदर्यतापूर्वक वर्णन किया गया है।

'आषाढस्य प्रथम दिवसे' में वर्षा कालीन प्राकृतिकता मन को हर लेने वाली है। मोतियों के समान वर्षा जल की बूँदें वृक्षों से वार्तालाप कर गिरती हैं। मैकल का सौन्दर्य भी निराला है। सतपुड़ा तथा विंध्य के मध्य नर्मदा का जल अपनी शीतलता, प्रकृति को वितरित कर

www.STUDYDISCUSS.IN

CGBSE

2018 (12) 36 + 4 = 40

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

रही है। आकाश पर मेघदलों की क्रीडा मनमोहक है।

सोन का उद्गम भी कम नहीं है। वहाँ का प्राकृतिक अंचल अपने हरियाली से ~~चुक्ष~~ चक्षुशीतलता प्रदान करते हैं। उनके जलप्रपात की सुन्दरता दन्त कथाओं को व्यक्त कर रहे हैं। कालीदास ने तो समूचे अमरकंटक पर मुग्ध हो 'आम्रकूट' की संज्ञा प्रदान की।

सुन्दर अरण्यावली, हरित वर्ण युक्त धरती सदैव नर्मदा का गुणगान कर रही है। नर्मदा भी अपनी ~~स~~ सुन्दरता का परिचय दे रही है। मेघदलों की गर्जना मंद वर्षा का संकेत करती है। इस प्रकार नर्मदा सचमुच दैवीय गुणों की अभिव्यक्ति कर रही है।

CGBSE
CGBSE

2018 (13) 40 + 3 = 43

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 13

उत्तर :-

सिकुमार की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। ऐसी विषम परिस्थिति में उसके पिता रामचरण की मृत्यु हो जाती है। ग्रामीण परम्परा के अनुसार मृतकों के परिवारवालों को मरिया भोज खिलाने की प्रथा थी।

रामचरण की आर्थिक विपन्नताओं के कारण उसने बैठक में मरिया प्रथा बंद करने की विनती की।

परन्तु ग्रामीण परम्परा के लिए बाध्य किए जाने पर वह मरिया भोज हेतु अपनी खेतीहर भूमि बेच देता है। नौकरी हेतु वह घर के आभूषण भी बेच देता है। आखिर में थक - हार कर वह सड़क पर आ जाता है और उसके समक्ष मजदूरी के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं होने के कारण वह मजदूर बन जाता है।

सिकुमार इसप्रकार मजदूर बन जाता है।

CGBSE
www.studydiscuss.in

CGBSE

2018 (14)

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक
43	+	5	=	48

[प्रश्न क्रमांक-16]

(अथवा)

प्रति,

सचिव,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल
रायपुर, छत्तीसगढ़।

विषय- दसवीं बोर्ड परीक्षा की अंकसूची की द्वितीय प्रति प्रदान करने हेतु।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि पिछले वर्ष 2016 को मैंने बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की। परन्तु दुर्भाग्यवश मेरी अंकसूची खो गई है।

अतः आपसे निवेदन है कि मेरी 10वीं के अंकसूची की द्वितीय प्रति प्रदान करें। मेरे संबंधित जानकारी तथा बैंक ड्राफ्ट 100रू संलग्न है।

मेरा विवरण:-
नाम- कुमारी सुनीता
पिता- रामलाल
माता- सीताबाई
अनुक्रमांक- 1181200323
नां॰ क्र॰ - A18/1314/2030
परीक्षा केन्द्र क्र॰ - 1180
दिनांक- 08/03/18

प्रार्थी
कुमारी सुनीता
पता- ग्राम- साल्हेटोला,
तहसील- अंबागढ़चौकी

2018 (15) 48 + 5 = 53

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक 17

अपठित गद्यांश :-

उत्तर (i) :- गद्यांश का उचित शीर्षक
"व्यंग्य की उत्पत्ति"
या
"साहित्य में व्यंग्य, एक विधा"

1

उत्तर (ii) (अथवा) :-
हरिशंकर परसाई जी ने व्यंग्य को व्यंग्य की तरह लिखकर तथा सृजनात्मकता को मानवीय संवेदनाओं से जोड़ कर व्यंग्य को विशेष ऊँचाई प्रदान की।

2

उत्तर (iii) :- साहित्य में हास्यास्पद मानसिकता के कारण परिणामस्वरूप व्यंग्य उपजता है, उसे शब्दों के क्रम में व्यवस्थित किया जाता है। यह व्यक्तिगत, व्यवस्थागत असंतुष्टि और मन की खिन्नता के फलस्वरूप उपजी शाब्दिक प्रक्रिया है।

2

CGBSE
WWW.STUDYDISCUSS.IN

2018 (16) 53 + 2 = 55

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रश्न क्रमांक - 18

उत्तर :- (iv) अनुशासन और विद्यार्थी

रुपरेखा :-

(i) प्रस्तावना ।
(ii) अनुशासन का अर्थ
(iii) अनुशासन के प्रकार
(iv) अनुशासन एवं विद्यार्थी मे संबंध
(v) विद्यालयीन अनुशासन
(vi) खेल मे अनुशासन
(vii) अनुशासनहीनता एक समस्या।
(viii) समस्या का समाधान
(ix) उपसंहार
(x)

* "विद्यार्थी को सफलता से जोड़ने वाली डोर अनुशासन है"

* प्रस्तावना :-

जिस प्रकार प्रकार मणि विहीन सर्प, सुगंध रहित पुष्प अशोभायमान है। उसी प्रकार विद्यार्थी की भी शोभा अनुशासन से बढ़ती है। प्राचीन काल

(P.T.O)

2018 (17) 55 + – = 55

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 4 के अंक कुल अंक

से ही अनुशासन का स्वरूप बदल रहा है परन्तु उसका केन्द्रीय भाव अपरिवर्तनशील है। मानव जीवन के प्रत्येक पहलुओं में अनुशासन का महत्व अतुलनीय है। कहा भी गया है कि:-

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रं, अमित्रस्य कुतः सुखम्।

अर्थात् आलस्य जहाँ है वहाँ विद्या, धन, मित्र तथा सुख को कोई स्थान नहीं है।

* अनुशासन का अर्थ:-

अनुशासन शब्द अनु उपसर्ग तथा शास् धातु से निर्मित शब्द है। यूँ तो साधारण तौर पर इसका अर्थ समय की प्रतिबद्धता होता है। अर्थात् समय के बंधन से बँधा जीवन ही अनुशासन है। समाज में बाल्यकाल की श्रेष्ठता

(P.T.O)

CGBSE
www.studydiscuss

2018 (18) 55 53 + — = 55 53

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 4 के अंक | कुल अंक

प्रदान करने में अनुशासन का विशेष महत्व है। अतः बाल्य काल में ही विद्यार्थियों को अनुशासन की महत्ता को बताया जाना चाहिए।

* अनुशासन के प्रकार:-

शास्त्रानुसार अनुशासन को दो भागों में वर्गीकृत किया गया है। जो निम्नांकित है:-

(i) बाह्यानुशासन।
(ii) आंतरिक अनुशासन।

(i) बाह्यानुशासन:- बाह्यानुशासन प्रायः विद्यालय, घर, बाजार आदि में परिलक्षित होता है। बाह्यानुशासित होने का मूल कारण भय है। बड़ों के डर से प्रायः बाहरी रूप से अनुशासित दिखाई देते हैं।

(P.T.O)

CGBSE
WWW.STUDYDISCUSS.IN

2018 (19)

55		6		55
58	+	10	=	68
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

58

(ii) आंतरिक अनुशासन:-

आंतरिक अनुशासन बालकों में आंतरिक रूप से दिखायी देता है। इसमें भय का कोई आधिपत्य नहीं होता है। यह स्वप्रेरणा द्वारा निर्मित होता है।

★ अनुशासन एवं विद्यार्थी जीवन में संबंध:-

अनुशासन तथा विद्यार्थी जीवन में अनुशासन अपनी घनिष्टता सदैव विद्यार्थी के साथ व्यक्त करता है। बाल्य काल से ही बच्चों का पालन-पोषण भी विधिवत ढंग से किया जाता है जो आगे आगे चलकर अनुशासन का रूप धारण कर लेती है।

~~उपसंहार~~

"स्वयं पर शासन,
फिर अनुशासन!"

(P.T.O)

CGBSE

55	+		=	55	पृ.क्र.
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ के अंक		कुल योग	

2018

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर

परीक्षार्थी हेतु-

पूरक उ.पु. 8 पृष्ठ

प्रश्न पत्र सेट **A, B, C** लिखें: A

परीक्षा के नाम की सील: हाई स्कूल सर्टि.परीक्षा

1. विषय: हिन्दी

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर

(कृपया यहाँ से लिखना प्रारम्भ करें)

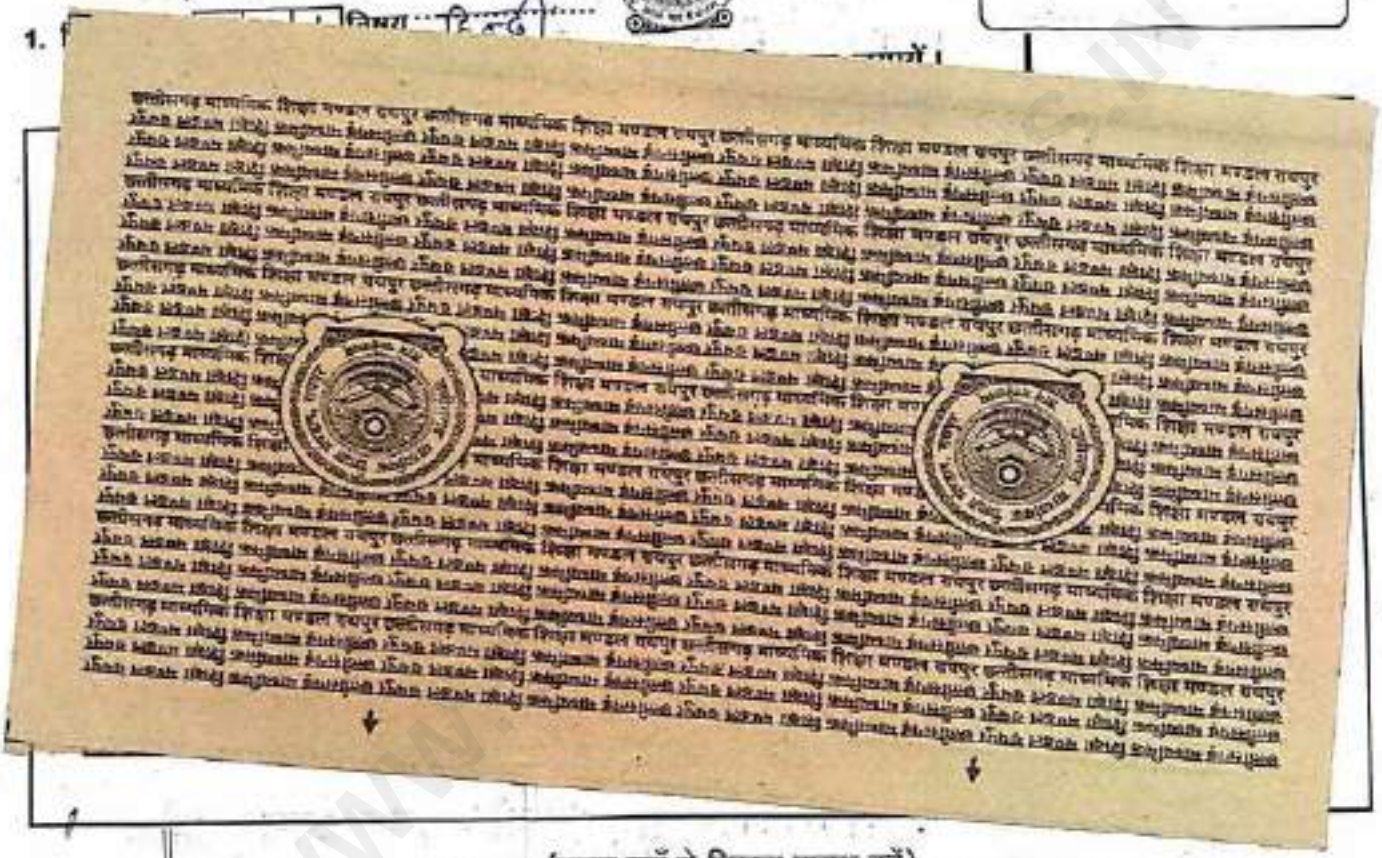

(P.T.O)

C G B S E

55 + 4 = 59 पृ.क्र. 02

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

CGBSE

* विद्यालयीन अनुशासन :-

प्राचीन काल में विद्यार्थी घर से बाहर जाकर शिक्षा ग्रहण करता था। उसका जीवन पूर्णत: अनुशासन में बंधा हुआ होता था। परन्तु अब आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी अनुशासन का महत्व है। विद्यालय का खुलना, खेल हेतु कालखण्ड, प्रत्येक विषय का कालखण्ड, भोजन अवकाश तथा अवकाश आदि निश्चित समय सीमा में बंधे होते हैं।

" अनुशासन सफलता का मूल मंत्र है"

* खेल में अनुशासन :-

अनुशासन पढ़ाई में ही नहीं खेल में भी होती है। वास्तव में बच्चे पढ़ाई की अपेक्षा खेल में अधिक रुचि रखते हैं। अत: अनुशासन का विकास विद्यार्थी जीवन में क्रीडा प्रांगण द्वारा प्रारम्भ होती है। प्रत्येक खेल में विशेष अनुशासन प्रणाली होता है जो विद्यार्थी हेतु आवश्यक है।

59 + — = 59 पृ.क्र. 03

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

CGBSE

★ अनुशासनहीनता एक समस्या:-

माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक विद्यार्थी अनुशासित होते हैं। परन्तु विश्वविद्यालयीन होते ही वे अनुशासनहीनता करने लगते हैं। चूँकि प्रायः बड़े स्तर पर शिक्षा प्राप्त करनेवालों पर कोई रोक-टोक नहीं होती। जो उनके उद्दण्डता के लिए पर्याप्त है।

★ समस्या का समाधान:-

बच्चे क्यों अनुशासनहीन हो रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर हमारे ही पास है। हमारे द्वारा उन्हें स्वच्छंद विचरण की अनुमति, रोक-टोक में अचानक कमी उन्हें अनुशासन के मार्ग से भटका देती है।

हमारा कर्तव्य है कि बच्चों को अनुशासन के प्रति आगे बढ़ाएँ। चूँकि ये ही हमारे भावी कर्णधार हैं, अतः उनकी अनुशासनहीनता पर, रोक हमारा दायित्व है। तभी हमारा भविष्य सुरक्षित होगा।

59 + 2 = 61 पृ.क्र. 04

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

*उपसंहार :-

प्राय: हम देखते आ रहे हैं कि बच्चों की अनुश अनुशासनहीनता सिर चढ़ कर बोल रही है। हमारा कर्त्तव्य भी उन्हें अनुशासित रखना है क्योंकि छात्र जीवन ऐसा जीवन होता है, जिसमें उसे अनंत गुणों से वशीभूत किया जा सकता है। कहा भी गया है कि:-

"बाल्य जीवन कच्चे मिट्टी के पिण्ड
के समान होता है,
जिसमें अनंत गुणों से विभूषित
कर ढाला जा सकता है।"

वर्तमान में अनुशासन हीनता को समाप्त करना हमारा ध्येय है तभी एक स्वस्थ व स्वस्थ युवा वर्ग की कल्पना की जा सकती है।

★ "अनुशासन ही सफलता की कुंजी है।" ★

CGBSE

61 | — | 61 पृ.क्र. 05

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

प्रश्न क्रमांक-12

(अथवा)

अवतरण- "बाबा आदम .... जाता था"

संदर्भ:- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के षष्ठ इकाई 2 "समसामयिक मुद्दे" पाठ 2.1 "मैं मजदूर हूँ" से लिया गया है। जिसके लेखक 'डॉ भगवत शरण उपाध्याय जी" हैं।

प्रसंग:- इस अंश में लेखक ने मजदूर के श्रम का बहुत ही सुन्दर चित्रण किया है।

व्याख्या:- लेखक के अनुसार मजदूर ने (आत्मकथात्मक रूप से) प्राचीन काल के वनों को काटकर, जमीन खोदकर उसे उपजाऊ बनाया। तथा उसमें फसल का रोपण किया। मैंने कृषि कर अन्न उपजाया है। सामन्ती प्रथा युक्त दुनिया का निर्माण किया जिसमें हम जैसे मजदूरों को कष्ट देने हेतु कारण

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ के अंक		कुल योग
61	+	4	=	65

पृ.क्र. 06

CGBSE

कठघरों मे रखा गया।

विशेषता (i) भाषा सहज- सरस एवं प्रवाह पूर्ण है।

(ii) विदेशी शब्दों का प्रयोग किया गया है। उदा०- जनरलों आदि।

(iii) बिम्ब प्रतीकों का प्रयोग किया गया है।

(iv) आत्मन-कथात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

(v) विचारात्मक लेख है।

WWW.STUDIESCS.IN

65 + 4 = 69 पृ.क्र. 07

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

प्रश्न क्रमांक-15

अवतरण- सरिता के नीरव -----वाली ॥

संदर्भ:- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी के इकाई 6 "जीवन-दर्शन" पाठ "साध" नामक शीर्षक से लिया गया है। जिसके कवयित्री "सुभद्रा कुमारी चौहान" है।

प्रसंग:- इस पद्यांश में कवयित्री ने मधुर स्मृति युक्त नवजीवन की कल्पना की है।

4

व्याख्या:- कवयित्री कहती हैं कि हमारा जीवन नदी की भाँति प्रवाहशील हो, जो जिसके प्रत्येक पहलू में अत्यंत सुन्दरता हो। हम ऐसी रचनाएँ करें जो सम्पूर्ण निर्जीव तन में प्राण का संचार करने वाली हो तथा हमारी रचना के प्रताप से दसों दिशाएँ अनुरंजित हो जाए।

CGBSE

69 + – = 69 पृ.क्र. 08

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ के अंक कुल योग

CGBSE

विशेषः-

(i) उपमा अलंकार का प्रयोग-
प्रवाह-सा आदि

(ii) अनुप्रास अलंकार की छवि :-
① रचे रुचिर रचनाएँ
② दिशि-दिशि आदि।

(iii) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग हुआ है-
① दिशि-दिशि आदि।

(iv) तुकान्तक कविता का अंश है।

(v) भाषा प्रवाहपूर्ण है।

WWW.STUDIDISCUSS.IN

69 + — = 69 पृ.क्र. 01

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ के अंक | कुल योग

2018

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर

परीक्षार्थी हेतु

पूरक उ.पु. 8 पृष्ठ

प्रश्न पत्र सेट **A, B, C** लिखें A

परीक्षा के नाम की सील

हाई स्कूल सर्टि.परीक्षा

1. विषय कोड 001 विषय हिन्दी

(कृपया यहाँ से लिखना प्रारम्भ करें)

CGBSE

69 3 72

69 + 3 = 72 पृ.क्र. 02

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ के अंक कुल योग

प्रश्न क्रमांक -15

उत्तर :- चार बिन्दुएँ जहाँ पर 'गोधूलि' कहानी की परिस्थितियाँ बदलती हैं :-

(i) "गोधूलि पराजय की बेला है।"

(ii) "आपका मूड भी हरगिज ठीक नहीं होता यदि आपके साथ भी मेरे जैसा होता।"

3

(iii) "कुछ देर पहले मैंने यहाँ साबुन की टिकिया रखी थी।"

(iv) "कहानी सुनाए जाने के बाद निस्तब्धता छायी रही।"

(v) "मुझे याद है कुछ वर्ष पूर्व मैंने भी विदेशी राजधानी में ऐसा ही कुछ किया है।"

— — ००० — — —

CGBSE

www.studiscuss.in